(3) परीक्षण पदों का विकास

निबन्धात्मक एवं वस्तुनिष्ठ परीक्षाएँ
(Essay Type and Objective Type Examination)

परीक्षा का अर्थ एवं महत्व
(Meaning and Importance of Examination)

परीक्षा, प्रश्नों की एक शृंखला मात्र है जिसे कई रूपों में प्रयोग में लाया जाता है—लिखित तथा मौखिक। प्राचीन काल में परीक्षा का स्वरूप मौखिक अधिक था। आश्रम पद्धति के अन्तर्गत दूसरे आश्रम के आचार्य या मठाधीश आकर छात्र से प्रश्न पूछते थे। छात्र के संतोषजनक उत्तर देने पर उसे उत्तीर्ण घोषित कर दिया जाता था। लेकिन आज परीक्षा का स्वरूप लिखित है जिससे छात्र व शिक्षक दोनों को ही लाभ होता है। शिक्षक को जहाँ यह पता चलता है कि उसे अपने शिक्षण कार्य में कहाँ तक सफलता मिली है वहीं दूसरी ओर छात्र को यह पता चलता है कि उसने कितना सीखा है? परीक्षा से दोनों का ही मार्ग दर्शन होता है। इस प्रकार परीक्षा साधन है, साध्य नहीं।

परीक्षा के रूप (Forms of Examination)

सामान्यतः परीक्षा तीन प्रकार की होती है—मौखिक, लिखित तथा प्रायोगिक। मौखिक परीक्षा में छात्र से मौखिक रूप में प्रश्न पूछे जाते हैं जिनका उत्तर छात्र भी मौखिक रूप में ही देता है। यह एक प्रकार का साक्षात्कार ही होता है।

प्रायोगिक परीक्षा में छात्र को प्रयोगात्मक कार्य करना पड़ता है। यह परीक्षा सभी विषयों में नहीं ली जाती। भूगोल, मनोविज्ञान, विज्ञान आदि विषयों में ही यह परीक्षा ली जाती है।

लिखित परीक्षा एक प्रकार से मौखिक परीक्षा ही होती है। अन्तर केवल इतना होता है कि मौखिक परीक्षा में प्रश्नों का उत्तर छात्र को मौखिक रूप में देना होता है जबकि लिखित परीक्षा में प्रश्नों का उत्तर लिखित रूप में देना होता है। लिखित परीक्षा मुख्य रूप से दो प्रकार की होती है।

1. निबन्धात्मक परीक्षा प्रणाली
2. वस्तुनिष्ठ परीक्षा प्रणाली

निबन्धात्मक परीक्षा प्रणाली (Essay Type Test)

इन परीक्षाओं की नींव अत्यन्त गहरी है तथा इनमें सभी भली भाँति परिचित हैं। इन्हें रूढ़िवादी या परम्परागत परीक्षाओं के नाम से भी जाना जाता है। इन परीक्षाओं का व्यापक रूप में प्रयोग होता है। इन परीक्षाओं में छात्र प्रश्नों का उत्तर विस्तार से देता है तथा उत्तर की कोई सीमा निर्धारित नहीं होती। प्रश्नों का उत्तर लिखने में उसे पूर्ण स्वतन्त्रता रहती है। आजकल इस प्रणाली में सुधार के परिणामस्वरूप तीन प्रकार के प्रश्न पूछे जाते हैं—अति लघु, लघु उत्तर तथा दीर्घ उत्तर। अति लघु प्रश्नों का उत्तर एक या दो शब्दों या लाइनों में देना होता है, लघु उत्तर प्रश्नों का उत्तर सात या आठ लाइनों में देना होता है तथा दीर्घ उत्तर प्रश्नों का उत्तर चार या पाँच पृष्ठों में देना होता है।

गुण (Merits)

इस परीक्षा प्रणाली के प्रमुख गुण निम्नलिखित हैं—

1. सीखने के कुछ ऐसे भी पहलू होते हैं जिनका मूल्यांकन इन्हीं परीक्षाओं के माध्यम से सम्भव है।
2. विद्यार्थी को अपने विचारों की अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतन्त्रता रहती है।
3. इन परीक्षाओं का निर्माण करना सरल कार्य है।
4. ये परीक्षाएँ मितव्ययी हैं।

Scanned with CamScanner

5. इन परीक्षाओं में नकल की सम्भावना कम रहती है।
6. इन परीक्षाओं की रचना के लिये किसी विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती।
7. इन परीक्षाओं से समय और शक्ति दोनों की बचत होती है।
8. ये परीक्षाएँ छात्र में अध्ययन की आदत का विकास करती हैं।
9. इन परीक्षाओं से व्यक्तित्व सम्बन्धी विभिन्न गुणों का मूल्यांकन किया जा सकता है।
10. इन परीक्षाओं से उच्च मानसिक क्रियाओं का मापन सम्भव है।

दोष (Demerits)

निबन्धात्मक परीक्षाओं के कुछ दोष भी हैं, जो इस प्रकार हैं—

1. ये परीक्षायें रटने पर बहुत अधिक बल देती हैं।
2. इन परीक्षाओं में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर प्रश्न नहीं पूछे जाते।
3. ये परीक्षाएँ सुन्दर लेख और भाषा-शैली पर अधिक महत्व देती हैं।
4. इन परीक्षाओं में संयोग तत्व (Chance Factor) अधिक हावी रहता है।
5. इन परीक्षाओं का अंकन आत्मनिष्ठ होता है।
6. इन परीक्षाओं के मानक स्थापित नहीं किये जा सकते।
7. इन परीक्षाओं में विद्यार्थी लिखते-लिखते थक जाता है तथा ये समय भी अधिक लेती हैं।
8. इन परीक्षाओं की वैधता और विश्वसनीयता निम्न स्तर की होती है।

वस्तुनिष्ठ परीक्षा-प्रणाली (Objective Type Test)

निबन्धात्मक परीक्षाओं के दोषों को दूर करने के लिये ही इस परीक्षा प्रणाली का निर्माण किया गया है। इन परीक्षाओं में जो प्रश्न पत्र बनाये जाते हैं उनमें प्रश्न छोटे-छोटे होते हैं जिनका उत्तर परीक्षार्थी को मात्र चिह्न लगाकर या कुछ ही शब्दों में देना होता है। प्रश्न पूरे पाठ्यक्रम पर आधारित होते हैं तथा प्रश्नों के उत्तर निश्चित होते हैं। इन परीक्षाओं द्वारा बालकों के समस्त ज्ञान की ठीक से परीक्षा हो जाती है तथा मूल्यांकन भी पक्षपात रहित होता है।

गुण (Merits)

वस्तुनिष्ठ परीक्षाओं के प्रमुख गुण इस प्रकार हैं—

1. ये परीक्षाएँ व्यापक होती हैं।
2. इन परीक्षाओं में अध्यापक पक्षपात करने से बचा रहता है।
3. ये परीक्षाएं विश्वसनीय तथा वैध होती हैं।
4. इन परीक्षाओं को प्रमापीकृत किया जा सकता है।
5. इन परीक्षाओं से विद्यार्थी ऊबता नहीं बल्कि परीक्षा एक दिलचस्प पहेली बनकर रह जाती है।
6. इन परीक्षाओं में विभेदकारी क्षमता होती है।
7. इन परीक्षाओं का अंकन करना सरल कार्य है।

दोष (Demerits)

इन परीक्षाओं के कुछ दोष भी हैं, जो इस प्रकार हैं—

1. विद्यार्थी प्रश्नों का उत्तर अनुमान से भी दे सकते हैं।
2. विद्यार्थी पाठ्य-वस्तु का गहराई से अध्ययन नहीं करते।
3. इन परीक्षाओं में नकल करने की सम्भावना बढ़ जाती है।
4. इन परीक्षाओं का निर्माण करना एक कठिन कार्य है।

Scanned with CamScanner

5. इन परीक्षाओं पर अधिक व्यय आता है।
6. इन परीक्षाओं से परीक्षार्थी के व्यक्तित्व पर प्रकाश नहीं पड़ता।
7. इन परीक्षाओं के निर्माण के लिये अध्यापक को विशेष प्रकार के प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं है।

इन परीक्षाओं में कई प्रकार के प्रश्न पूछे जाते हैं जिनका वर्गीकरण इस प्रकार है—

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के प्रकार

- पुनः स्मरण रूप (Recall Type)
  1. सामान्य पुनः स्मरण रूप (Simple Recall Type)
  2. रिक्त स्थान पूर्ति रूप (Completion Type)
- पहचान रूप (Recognition Type)
  1. बहु-विकल्प रूप (Multiple Choice Type)
  2. सत्य-असत्य रूप (True-False Type)
  3. मिलान रूप (Matching Type)
  4. वर्गीकरण रूप (Classification Type)
  5. तर्कयुक्त समानता रूप (Analogy Type)

सामान्य पुनः स्मरण रूप (Simple Recall Type)

(1) सामान्य पुनः स्मरण रूप : इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर छात्र को पुनः स्मरण से होता है; जैसे—

1. सूरदास का जन्म कब हुआ?
2. 'गोदान' उपन्यास की रचना किसने की?

(2) रिक्त स्थान पूर्ति : इस प्रकार के प्रश्नों में अपूर्ण कथन दिये होते हैं या प्रश्नों में रिक्त स्थान दिये होते हैं। विद्यार्थी इन अपूर्ण कथनों को पूरा करता है या खाली स्थानों की पूर्ति करता है।

1. भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का.....कहा जाता है।
2. हमारे देश के राष्ट्रीय कवि.....हैं।

पहचान रूप (Recognition Type)

(1) बहु-विकल्प रूप (Multiple Choice Type) : इस प्रकार के प्रश्नों में एक से अधिक संभावित उत्तर दिये रहते हैं जिनमें केवल एक सही होता है। परीक्षार्थी को उस सही उत्तर को लिखना होता है या उस पर सही का निशान (✓) लगाना होता है, जैसे—

(i) 'साकेत' की रचना की—मैथिलीशरण गुप्त ने, निराला ने, दिनकर ने, पन्त ने
(ii) गोदान उपन्यास लिखा—शुक्ल ने, महादेवी वर्मा ने, प्रेमचन्द ने, जैनेन्द्र ने
(iii) छायावादी कवि हैं—दिनकर, निराला, पन्त, प्रसाद।

इस प्रकार के प्रश्नों में विद्यार्थी अनुमान से अधिक लाभ उठा सकता है। उस लाभ पर रोक लगाने के लिये संशोधन सूत्र (Correction Formula) लगाते हैं, जो इस प्रकार है—

$$S = R - \frac{W}{N-1}$$

जहाँ, S = सही प्राप्तांक जो विद्यार्थी को मिले हैं।
R = विद्यार्थी द्वारा सही हल किये गये प्रश्नों की संख्या।
W = विद्यार्थी द्वारा गलत किये गये प्रश्नों की संख्या।
N = विकल्पों की संख्या।

Scanned with CamScanner

(2) सत्य-असत्य रूप (True/False Type) : इस प्रकार के प्रश्नों में दिया गया प्रश्न या कथन या तो सही होता है या गलत। विद्यार्थी यदि प्रश्न को सही समझता है तो T पर गोला बना देता है और यदि प्रश्न को गलत समझता है तो F पर गोला बना देता है, जैसे—

(i) बिहारी वीर रस के कवि हैं। T F

(ii) 'शाकुन्तलम्' प्रसाद की रचना है। T F

(iii) 'जीभ' निराला की कृति है। T F

इस प्रकार के प्रश्नों में अनुमान से उत्तर देने की संभावना बहु-विकल्प प्रश्नों से भी अधिक बढ़ जाती है। अतः यहाँ भी हम संशोधन सूत्र लगाते हैं, जो निम्न है—

$$S = R - W$$

जहाँ, S, R, W का अर्थ पूर्व सूत्र की ही भाँति है।

(3) मिलान रूप (Matching Type) : इस प्रकार के प्रश्नों में दो कॉलम (स्तम्भ) 'A' तथा 'B' दिये होते हैं। कॉलम 'A' में प्रश्न तथा कॉलम 'B' में उत्तर दिये होते हैं। विद्यार्थी को प्रश्न को उसके सही उत्तर के साथ मिलाना होता है या सही उत्तर का क्रमांक उसके सामने दिये कोष्ठक में लिखना होता है। इस प्रकार के प्रश्नों में कॉलम 'A' में दिये गये प्रश्न एक ही विधा पर आधारित होने चाहिए तथा कॉलम 'B' के उत्तरों की संख्या प्रश्नों से दो अधिक रखनी चाहिये ताकि विद्यार्थी अनुमान से उत्तर न दे सकें, जैसे—

कॉलम 'A'	कॉलम 'B'	
1. कबीर दास	1. मधुशाला	( )
2. बच्चन	2. सूरसागर	( )
3. जयशंकर प्रसाद	3. कामायनी	( )
4. सूरदास	4. बीजक	( )
5. रामचरित मानस		( )
6. नख शिख वर्णन		( )

(4) वर्गीकरण रूप (Classification Type) : इस प्रकार के पदों में छात्रों के समक्ष शब्दों का एक समूह प्रस्तुत किया जाता है जिसमें एक शब्द बेमेल या असंगत होता है। छात्र को इस बेमेल शब्द को छाँटकर रेखांकित करना होता है, जैसे—

(i) रस, छन्द, अलंकार, हार की जीत।

(ii) पन्त, निराला, प्रसाद, महादेवी वर्मा।

(5) तर्कयुक्त समानता (Analogy Type) : इस प्रकार के प्रश्न गणित के समानुपात पर आधारित होते हैं अर्थात् जो सम्बन्ध पहली दो राशियों में है वही सम्बन्ध बाद की दो राशियों में भी होता है। विद्यार्थी को बाद की दो राशियों के अपूर्ण सम्बन्ध को भरना होता है, जैसे--

(i) आंसू : प्रसाद :: होरी .....

(ii) नागार्जुन : जनवादी :: विष्णु प्रभाकर .....

निबन्धात्मक परीक्षा प्रणाली का महत्व (Its Importance)

निबन्धात्मक परीक्षा प्रणाली की प्रमुख उपयोगिताएँ इस प्रकार हैं—

1. इस परीक्षाओं का निर्माण आसानी से किया जा सकता है।
2. ये परीक्षाएँ सभी विषयों के लिये उपयुक्त हैं।
3. इन परीक्षाओं से अध्ययन करने की अच्छी आदतों का विकास होता है।
4. मानसिक योग्यताओं का मापन इन्हीं परीक्षाओं के माध्यम से किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

5. इन परीक्षाओं द्वारा जहाँ एक ओर छात्र की निष्पत्ति का मापन किया जाता है वहीं दूसरी ओर इससे शिक्षक की शिक्षण प्रभाविता का भी मापन किया जाता है।
6. ये परीक्षाएँ छात्र एवं शिक्षक दोनों की ही दृष्टि से अत्यन्त सुविधाजनक है।
7. इन परीक्षाओं में छात्रों को अपने विचारों को अभिव्यक्त करने की पूर्ण स्वतन्त्रता रहती है।
8. ये परीक्षाएँ समय, श्रम एवं धन की दृष्टि से मितव्ययी हैं।
9. इन परीक्षाओं के माध्यम से छात्र की मौलिक चिन्तन शक्ति का विकास होता है।
10. इन परीक्षाओं के माध्यम से छात्र के व्यक्तित्व की झलक स्पष्ट होती है। उच्च प्रशासनिक प्रतियोगी परीक्षाओं में इन परीक्षाओं का ही चलन है।
11. इन परीक्षाओं के माध्यम से छात्र के भाषा ज्ञान व लेखन शैली का आसानी से परीक्षण हो जाता है।
12. इन परीक्षाओं में छात्रों को प्रश्नों के उत्तर एक निर्धारित समय सीमा में लिखने होते हैं। परिणामतः छात्र समय की पाबन्दी का महत्व समझने लगते हैं।
13. ये परीक्षाएँ गृह कार्य एवं कक्षा कार्य की दृष्टि से बहुत उपयोगी मानी जाती है।
14. रचना (निबन्ध) की परख इन परीक्षाओं द्वारा सफलतापूर्वक की जा सकती है।
15. 'भाषा प्रयोग एक कौशल है' इस दृष्टि से हिन्दी भाषा के अनेक पहलुओं में से कुछ के ... करने के लिये ये परीक्षाएँ अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होती हैं।

वस्तुनिष्ठ परीक्षा प्रणाली का महत्व (Its Importance)

वस्तुनिष्ठ परीक्षा प्रणाली का महत्व निम्नलिखित विन्दुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है-

1. ये परीक्षाएं निरपेक्ष होती हैं। इन पर परीक्षक की आत्मनिष्ठता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
2. ये परीक्षाएं विश्वसनीय (Reliable) होती है।
3. ये परीक्षाएं अत्यन्त व्यापक होती है।
4. इन परीक्षाओं में विभेदकारी क्षमता होती है।
5. ये परीक्षाएं छात्र एवं शिक्षक दोनों की ही दृष्टि से व्यावहारिक हैं।
6. ये परीक्षाएं सहज रूप में छात्रों पर प्रशासित की जा सकती हैं।
7. इन परीक्षाओं में अंकन कार्य अत्यन्त सुगमतापूर्वक किया जा सकता है।
8. इन परीक्षाओं के मानक भी स्थापित किये जा सकते हैं।
9. इन परीक्षाओं में छात्र के अंकों पर उसकी भाषा एवं सुलेख का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
10. इन परीक्षाओं में अधिकाधिक विषय सामग्री का समावेश सुनिश्चित किया जा सकता है।
11. इन परीक्षाओं के निर्माण में विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता पड़ती है।
12. यह परीक्षा प्रणाली परीक्षार्थी को विषय का गहन अध्ययन करने के लिये बाध्य करती है।
13. इन परीक्षाओं के माध्यम से कम समय में अधिक ज्ञान का परीक्षण किया जा सकता है।
14. इन परीक्षाओं में रटने को कोई स्थान नहीं दिया जाता।
15. इन परीक्षाओं में छात्रों की योग्यता का सही मूल्यांकन होता है, परिणामतः छात्रों में आत्मविश्वास उत्पन्न होता है।

Scanned with CamScanner